'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) – 3.009, (GIF) –0.676 (2013)
Vol. 3, Issue-4
ISSN : 2348-7143
Oct-Nov-Dec 2017

रमणिका गुप्ता की पर्यावरण संविद्य कविता

सुश्री। वंदना प्रकाश पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स अंड कॉमर्स कॉलेज
मालवाडी – कोतोली

सारांश :

रमणिका गुप्ता की दृष्टि पर्यावरण असंतुलन में वृक्ष कटौती की ओर अधिक जाती है। वृक्ष कटौती के कारण मानव जीवन पर अधिक दुष्परिणाम होते हैं । मानव अपने स्वार्थ के लिए वृक्षों को काटता है जिसके कारण वायु अशुद्ध बनती जा रही है, मौसम में बदल हो जाता है। कारखनों की निर्मिति के करण उनसे निकलनेवाले अवशिष्ट को नदी में छोडने से जल प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। कारखानों से निकलेनेवाले धुँए के कारण वायु प्रदूषण बडी मात्रा में होने लगा है। युद्ध के समय उपयोग किए गए अण्वस्त्रों के कारण हवा दूषित बनती है। मानव खेती करने के बदले जमीन का नाश हो रहा है आदि कारणों से पर्यावरण असंतुलन बढता जा रहा है, उसके प्रति कवयित्री चिंतित है। मानव जीवन में पर्यावरण का अधिक महत्त्व है उसकी रक्षा करना हर मानव का कर्तव्य है। यहीं बात कवयित्री समाज को सजग करना चाहती है।

मूलशब्द : पर्यावरण, प्रकृति, असंतुलन, वृक्ष, वायु, धुँआ, प्रदूषण, साहित्य, सजगता

शोध प्रविधियाँ : शास्त्रीय, सर्वेक्षणात्मक, व्याख्यात्मक

रमणिका गुप्ता की पर्यावरण संविद्य कविता :

प्रकृति स्वयंपूर्ण है वह अपने अस्तित्व के लिए किसी दूसरी वस्तु पर निर्भर नहीं है। पहले प्रकृति की निर्मिति हुई है और बाद में मानव की मानव ही प्रकृति पर निर्भर रहता है। प्रकृति के अंतर्गत आनेवाले सभी घटक मिलकर पर्यावरण बनता है।

'पर्यावरण' का तात्पर्य उस समूची भौतिक एवं जैविक व्यवस्था से है जिसमें जीवधारी रहते हैं, बढते हैं, पनपते हैं और अपनी स्वाभविक प्रवृत्तियों का विकास करते हैं।प्रकृति मानव जीवन को नियंत्रित करती है और मानव पर्यावरण को। प्राचीन काल से प्रकृति की हर इकाई तथा प्राकृतिक परिवेश को उसके मूल रुप में सुरक्षित रखने की मानव की प्रवृत्ति रहीं है। परंतु बीसवी शती के उत्तरार्ध में मानव के कारण ही उसमें असंतुलंन होता गया है। परिणामत: पर्यावरण में दोष उत्पन्न होने लगा है जिससे विविध तरह का प्रदूषण बढने लगा है। वैज्ञानिकों के द्वारा प्रदूषण को रोकने के लिए विविध स्तरों पर प्रयास किए जा रहे है उसीप्रकार साहित्यकार भी अपने सहित्य द्वारा बढते हुए प्रदूषण के प्रति लोगों को जागृत करने का काम करते हैं। इन सहित्यकारों में कवयित्री रमणिका गुप्ता की कविता में अधिक मात्रा पर्यावरण प्रदूषण के प्रति सजगता निर्माण करने का कार्य दिखाई देता है।

रमणिका गुप्ता एक संवेदनशील कवयित्री है उन्होंने अपनी कविताओं में मानविय संवेदना, शोषण के प्रति विरोध आदि भाव दिखाई देते हैं। इसके साथ – साथ पर्यावरण संवेदना का भी चित्रण उनकी कविताओं में हुआ है। कवयित्री अपनी कविताओं के संदर्भ में लिखती है – हिमलय की चट्टनों से उभरी यह कविता जिंदा मुर्दा चट्टनों के परिवर्तन विकास बढाव लगाव की रचना है।'[1] रमणिका जी बचपन से कविता लिखती आयी है। परंतु उअनका कविता लिखने का उद्देश्य स्वात: सुखाय नहीं है बल्कि उनकी कविताओं से यथार्थता का चित्रण होता है। इसके बारे में कवयित्री कहती है- 'कविता में लिखती नहीं कविता मेरे पास आती है, मेरे साथ रहती है

चलती – फिरती है और मुझे टोकती भी है....मैं कविता स्वात: सुखाय नहीं लिखती। एक दृष्टि है – एक दिशा है- एक लक्ष्य है जो लिखने के समय नहीं बल्कि लिखने के बाद मुखर होते हैं ... संवेदना मेरी अभिन्न मित्र है।'[2]

वर्तमान समाज में सभ्यता के नाम पर बहुत नए-नए विचार आ रहे हैं। जिनके कारण पर्यावरण का - हास हो रहा है। इसकी चिंता कवयित्री 'युद्ध के विरुद्ध विश्व एक साथ है' कवितामें अभिव्यक्त करती है।

'सभ्यता के चरण कहीं प्रकृति को न रोंद दें
युद्ध के धुंए कहीं हवा को न होन दें
शोषण के अट्टाहास गीत ही न छीन लें
खुँखार अहसास गीत ही न छीन लें
सहमी डरी आँखों में डूबे नहीं झालें
जहरीली गैसे सूरज ही न पीलें।[3]

वर्तमान समय में मानव सभ्यता के पीछे लगा हुआ है। सभ्यता के नाम पर प्राकृतिक सौदर्य को नष्ट करके नई-नई इमारतें बनवा रहें हैं। इसके कारण शुद्ध हवा का मिलना मुश्किल हो गया है। उसीप्रकार एक-दूसरे का श्रेष्ठत्त्व दिखाने के लिए विश्व में युद्ध का वातावरण फैल रहा है युद्ध के कारण वायु प्रदूषण कहीं मात्रा में हो रहा है। अत: कवयित्री को डर लगता है कि इस युद्ध के धुँए के कारण सूरज का प्रकाश भी पृथ्वी तक शुद्ध रुप से आना बंद हो जाएगा।

'पी न जाए कहीं जहरीली गैसे सूरज
एल्पस की किरणों के मुकुट्वाली
सुरमीली बर्फीली नोकदार चोटियाँ
एटम की आग कहीं
जार न दें।[4]

कवयित्री इन पंक्तियों में हवा प्रदुषण के दुष्परिणामों के बारे में मानव को सजग करना चाहती है वह कहती है कि आज मानव अपनी सुख-सुविधाओं के कारण अनेक नयी- नयी चीजें निर्माण करने लगा है। उन चीजों से निकलनेवाला धुआँ, कारखानों का धुआँ जिसके कारण हवा जहरीली बनने लगी है। और उसके परिणाम से हवा में उष्णता बढने लगी है। उस उष्णता के कारण कहीं एल्प्स पर्वत का बर्फ पिघल जाएगा ऐसा डर कवयित्री को लगता है।

पहाड छटेंगे
उनपर उगे जंगल कटेंगे
घाटी पटेगी पत्थरों से
मिट्टी से
....घटेगा पानी ...
झरनों का अनंत स्त्रोत
कम पट जाएगा
पर सोने की प्यास जरूर
बुझाएगा
खेत पराये हो जायेंगे ...?
होने दो
घर कब्र बन जायेंगे ...?
बनने दो'।[5]

कवयित्री को मानव के सुखोपयोगी स्वभाव के कारण मानव अपने सुख-चैन के लिए सोने के पीछे लगा हुआ है सोने की प्यास बुझाने के लिए मानव पहाड खोदने लगा है, जंगल उखारने लगे है जिसके परिणाम स्वरुप सभी ओर मिट्टी के बदले पत्थर फैलने लगे हैं, जंगल कटने के कारण बारीश कम होने लगी है झरनों का पानी कम होने लगा है। मानव अपनी पानी की प्यास नहीं बुझा सकेगा खेत के लिए पानी नहीं मिलेगा खेत से अनाज न निकालने के कारण मानव को अनाज नहीं मिलेगा अत: घर कब्र बन जाने में देर नहीं लग सकेगी। कवयित्री इसलिए कहती है कि मानव की सोने की प्यास जरूर बुझेगी परंतु पानी की प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं मिलेगी । मतलब मानव चैन-विलसिता के पिछे लगने के कारण पर्यावरण का -हास होने लगा है।

रमणिका गुप्ता की दृष्टि पर्यावरण असंतुलन में वृक्ष कटौती की ओर अधिक जाती है। वृक्ष कटौती के कारण मानव जीवन पर अधिक दुष्परिणाम होते हैं । मानव अपने स्वार्थ के लिए वृक्षों को काटता है जिसके कारण वायु अशुद्ध बनती जा रही है, मौसम में बदल हो जाता है। कारखनों की निर्मिति के करण उनसे निकलनेवाले अवशिष्ट को नदी में छोडने से जल प्रदूषण बढ्ता जा रहा है। कारखानों से निकलेनेवाले धुँए के कारण वायु प्रदूषण बडी मात्रा में होने लगा है। युद्ध के समय उपयोग किए गए अण्वस्त्रों के कारण हवा दूषित बनती है। मानव खेती करने के बदले जमीन का नाश हो रहा है आदि कारणों से पर्यावरण असंतुलन बढता जा रहा है, उसके प्रति कवयित्री चिंतित है। मानव जीवन में पर्यावरण का अधिक महत्त्व है उसकी रक्षा करना हर मानव का कर्तव्य है। यहीं बात कवयित्री समाज को सजग करना चाह्ती है।

संदर्भ संकेत :

१. गुप्ता रमणिका : पुर्वाचल : एक कविता यात्रा, नवलेखन प्रकाशन, दिल्ली, व्दि. सं. 1994
२. गुप्ता रमणिका : विज्ञापन बनता कवि, नवलेखन प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1996 पृ. 17,18,28,29